UPPCS MAINS TEST - 9 (SOLUTION)

Q 1.

आज यदि आप संसार की सारी समस्याओं का विश्लेषण करें तो इनके मूल में एक ही बात पायेंगे-मनुष्य की तृष्णा। यह अद्भुत तृष्णा कहीं समाप्त होने का नाम नहीं लेती। मनुष्य में सर्वत्र अभाव-ही-अभाव भर गया है। जीवन की वह परिपूर्णता कम हो गई है जो मनुष्य को याचक न बनाकर दाता बनाती है। आज उत्पादन बढ़ाने की धूम है, जीवन का स्तर ऊँचा उठाने का संकल्प मुखर है, परन्तु जीवन में वह उच्छलित आनन्द कैसे आयेगा जो मनुष्य को संयत और सन्तुष्ट बना सके, इसकी चिन्ता किसी को नहीं है। मैं भौतिक समृद्धि के प्रयत्नों को छोटा बनाने के उद्देश्य से यह बात नहीं कह रहा हूँ। उत्पादन को बढ़ाना आवश्यक है, जीवन स्तर को ऊँचा उठाने का प्रयत्न भी श्लाघ्य है, पर इतने से समस्या का हल नहीं हो जाता। तृष्णा वह आग है जिसके पेट में जितना भी झोंक दीजिए सब भस्म हो जायेगा। उस वस्तु की खोज होनी चाहिए जो मनुष्य को छोटे प्रयोजनों में बाँधने के बदले उसे प्रयोजनातीत सत्य की ओर उन्मुख करे। साहित्य और संगीत यही काम करते हैं, कला और सौन्दर्य उसे इसी ओर ले जाते हैं। नितान्त उपयोगिता की दृष्टि से भी विचार किया जाए तो मनुष्य समाज की स्थिति के लिए-सभ्यता और संस्कृति की रक्षा के लिए ही यह आवश्यक हो गया है कि मनुष्य अपने उस महान् उन्नायक धर्म की उपेक्षा न करे जो उसे क्षुद्रता और संकीर्णता से ऊपर उठाते हैं। भौतिक समृद्धि को बढ़ाने का प्रयत्न होना चाहिए, पर उसे सन्तुलित करने के लिए साहित्य और संगीत आदि का भी बहुल प्रचार वांछनीय है। प्रयोजनों की सीमा छोड़कर पशुसुलभ आहार-निद्रा के धरातल से ऊपर उठकर ही मनुष्य उस महिमा को पाता है, जो उसे देवता बनाते हैं।

(क) इस अवतरण में आए 'प्रयोजनातीत सत्य' और 'महान् उन्नायक धर्म' का अर्थ स्पष्ट कीजिए। 5

उत्तर:

अर्थ-

प्रयोजनातीत सत्य- आवश्यकताओं से मुक्त सत्य जो वास्तविक आनन्द है, जिसे संयम और सन्तोष से ही प्राप्त किया जा सकता है।

महान् उन्नायक धर्म- कल्याणकारी, श्रेष्ठ गुणों को विकसित करने वाला धर्म, जिसके कारण मनुष्य को क्षुद्रता और संकीर्णता से मुक्ति मिलती है।

(ख) उपर्युक्त अवतरण का भावार्थ अपने शब्दों में लिखिए। 5

गद्यांश का भावार्थ-

इस अवतरण में लेखक ने वर्तमान की समस्याओं का मूल कारण मनुष्य की असीम तृष्णा बताया है। यह तृष्णा कभी खत्म नहीं होती और इसी कारण जीवन में असंतोष और अभाव बढ़ता जा रहा है। वर्तमान में हर कोई केवल उत्पादन बढ़ाने और जीवन स्तर ऊँचा करने की कोशिश में लगा है, लेकिन असली खुशी और आन्तरिक संतोष की चिंता कोई नहीं करता। भौतिक सुख-सुविधाओं को बढ़ाना गलत नहीं है, पर केवल उसी से जीवन सफल नहीं होता। मनुष्य को केवल छोटे-छोटे स्वार्थों में नहीं उलझना चाहिए, बल्कि उसे ऐसे सत्य की ओर बढ़ना चाहिए जो उसे महान और उदार बनाए। साहित्य, संगीत, कला और सौंदर्य इंसान को ऊँचे विचारों और भावनाओं की ओर ले जाते हैं। केवल खाने, सोने और भोग-विलास में ही न फँसे रहकर, जब मनुष्य संयम, संतुलन और उच्च मानसिकता को अपनाता है, तभी वह सच्चे अर्थों में मनुष्य से देवता बनता है। इसलिए भौतिक विकास के साथ-साथ मानसिक और सांस्कृतिक विकास भी जरूरी है।

(ग) उपर्युक्त अवतरण में रेखांकित अंशों की व्याख्या कीजिए।

रेखांकित अंशों की व्याख्या:

आज यदि आप----------नहीं लेती।

व्याख्या:

आधुनिक समय में यदि हम संसार की सारी समस्याओं की व्याख्या करें तो एक बात स्पष्ट हो जाती है कि वास्तव में सब की जड़ मनुष्य की तृष्णा अर्थात् भौतिक सुविधाओं की अनवरत अतृप्त रहने वाली प्यास है जो कभी शान्त नहीं होती है।

आज उत्पादन----------बना सके।

व्याख्या:

आधुनिक समय में हर तरफ एक ही आवाज उठ रही है कि उत्पादन बढ़ाओ और जीवन-स्तर ऊपर उठाओ। किन्तु जीवन का उद्देश्य सच्चे आनन्द की प्राप्ति कैसे होगी, जिससे मनुष्य को संतोष प्राप्त होता है, इस सम्बन्ध में सोचना भी आवश्यक है।

तृष्णा----------जायेगा।

व्याख्या:

निरन्तर जलने वाली, कभी न बुझने वाली अग्नि के समान भौतिक सुखों की प्यास सदैव अतृप्त रहती है। कितना भी सुख मिले, उससे अधिक पाने की उत्कण्ठा सदैव बढ़ती रहती है।

प्रयोजनों की सीमा----------बनाते हैं।

व्याख्या:

आवश्यकताओं की समाप्ति की कोई सीमा नहीं होती है। पशुओं का सहज ज्ञान पेट भरने और सोने तक ही है। मनुष्य जब आवश्यकताओं से विमुख होकर, पशु आचरण से ऊपर उठकर अपने भीतर श्रेष्ठ गुणों का विकास कर लेता है तब वह देवता की स्थिति को प्राप्त कर लेता है।

Q 2.

सम्प्रदायवाद और राजनीतिक जातिवाद में एक समानता ध्यान देने योग्य है। सम्प्रदायवाद की तरह ही पिछड़ावर्गवाद या अन्य किसी भी

प्रकार का राजनीतिक जातिवाद भी वर्गीय एकता को तोड़ने का काम करता है। इस प्रकार वह जनतांत्रिक मूल्यों का विरोधी है। लेखक को इससे सावधान रहना होगा। आतंक और संकीर्णता दोनों ही लेखकों के लिए विजातीय हैं। यही कारण है कि हिन्दी ही नहीं समग्र भारतीय साहित्य की विराट परम्परा एवं विरासत में कहीं भी धर्मान्धता या कट्टरपन नहीं दिखाई पड़ता। मनुष्यता, मानवीय संवेदना रचना के लिये जरूरी है। लेकिन सम्प्रदायवाद और जातिवाद दोनों ही उनका निषेध करते हैं। लेखकीय कल्पना की भूमिका केवल बिम्बों और प्रतीकों की योजना के लिए नहीं, बल्कि समाज को, उसकी संस्कृति को मानवीय बनाने के लिए भी है। यह ऐतिहासिक दायित्व लेखकों पर आ गया है।

(क) उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक दीजिये। 5

उत्तर:

गद्यांश का शीर्षक "रचनाकार का दायित्व बोध" या "लेखकीय दायित्व बोध" या "साहित्यकार और संवेदना"।

(ख) उक्त गद्यांश का संक्षेपण एक-तिहाई शब्दों में कीजिए। 25

उत्तर:

संक्षेपण:

यदि साहित्य समाज का दर्पण है तो, साहित्यकार वह संवेदनशील चित्त है जिसके लेखकीय बोध की छननी से सम्प्रदायवाद, जातिवाद, धर्मान्धता, कट्टरता इत्यादि छन कर अलग हो ही जाने चाहिए। इसके स्थान पर उसे विश्वबन्धुत्व, प्रेम तथा सहयोग की भावना को ही अपने लेखन का उद्देश्य बनाना चाहिए।

Q 3.

(क) जिला कलेक्टर की ओर से मंडल आयुक्त को एक पत्र (शासकीय पत्र) लिखिए। इस पत्र में उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा राज्य में स्वच्छता के लिए चलाए जा रहे विभिन्न कार्यक्रम आम लोगों के क्रिया-कलाप को किस तरह प्रभावित किया, का विवरण हो। 10

उत्तर:

कार्यालय जिला कलेक्टर
_____ जिला, उत्तर प्रदेश
दिनांक: 30 सितम्बर, 2025
क्रमांक: _____/स्वच्छता/2025

प्रेषक:
जिला कलेक्टर
_____ जिला, उत्तर प्रदेश

सेवा में,
मंडलायुक्त
_____ मण्डल
उत्तर प्रदेश

विषय: स्वच्छता अभियान के प्रभाव संबंधी विवरण प्रेषण बाबत

महोदय,
सादर अवगत कराना है कि उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा राज्य में संचालित **स्वच्छता संबंधी विभिन्न कार्यक्रमों** — जैसे **स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण एवं शहरी), प्लास्टिक मुक्त अभियान, खुले में शौच से मुक्ति (ODF) अभियान**, आदि — का हमारे जनपद में आम जनता के क्रियाकलापों पर सकारात्मक प्रभाव देखने को मिला है।
इन कार्यक्रमों के परिणामस्वरूप निम्नलिखित प्रमुख परिवर्तन देखे गए हैं:

1. **साफ-सफाई के प्रति जागरूकता:** आम नागरिक अब अपने घर, गली, मोहल्ले तथा सार्वजनिक स्थलों की स्वच्छता बनाए रखने हेतु अधिक सजग हुए हैं।
2. **शौचालय निर्माण में वृद्धि:** ग्रामीण क्षेत्रों में शौचालयों का निर्माण बढ़ा है तथा खुले में शौच की प्रवृत्ति में उल्लेखनीय कमी आई है।
3. **प्लास्टिक का उपयोग घटा:** एकल-प्रयोग प्लास्टिक के विरुद्ध अभियान चलाए जाने के बाद दुकानदारों एवं उपभोक्ताओं में प्लास्टिक के उपयोग के प्रति सतर्कता बढ़ी है।
4. **स्कूलों व संस्थानों में सहभागिता:** विद्यालयों, कॉलेजों और सामाजिक संस्थाओं ने स्वच्छता रैलियाँ, निबंध प्रतियोगिता, चित्रकला आदि आयोजनों के माध्यम से जन-जागरूकता को बढ़ाया है।
5. **स्वास्थ्य पर प्रभाव:** साफ-सफाई में सुधार होने के कारण जलजनित एवं संक्रामक रोगों में गिरावट आई है, जिससे स्वास्थ्य सेवाओं पर भार भी कम हुआ है।
6. **जन-सहभागिता:** स्वच्छता केवल सरकारी कार्य नहीं रही, अब यह एक **जन आंदोलन** का रूप ले चुकी है जिसमें नागरिक सक्रिय रूप से भाग ले रहे हैं।

अतः उपरोक्त विवरणों से स्पष्ट होता है कि सरकार द्वारा चलाए जा रहे स्वच्छता अभियानों ने न केवल नागरिकों की आदतों में सकारात्मक परिवर्तन लाया है, बल्कि समाज में स्वास्थ्य, पर्यावरण और जीवन-स्तर पर भी उत्तम प्रभाव डाला है।
आपके निर्देशानुसार यदि किसी अन्य जानकारी की आवश्यकता हो तो शीघ्र उपलब्ध कराई जाएगी।

भवदीय,
(हस्ताक्षर)
जिला कलेक्टर
_____ जिला
उत्तर प्रदेश

(ख) परिपत्र से आप क्या समझते हैं? जिला अधिकारी की ओर से जिले के सभी मुखिया के लिए सफाई व्यवस्था पर ध्यान रखने के लिए परिपत्र का एक प्रारूप तैयार कीजिए। 10

उत्तर:

परिपत्र एक आधिकारिक सूचना या निर्देश होता है जो किसी कार्यालय या विभाग की ओर से संबंधित अधिकारियों, कर्मचारियों या अन्य सम्बंधित पक्षों को भेजा जाता है। इसका उद्देश्य किसी नयी नीति, नियम, निर्देश, सूचना या किसी विशेष कार्य के संबंध में जानकारी देना या कार्रवाई के लिए सूचित करना होता है।

परिपत्र का प्रारूप:

जिला प्रशासन उत्तर प्रदेश
जिलाधिकारी कार्यालय
.....जिला
क्रमांक: एफ 5-10/2025/एफ (1) दिनांक: 30 सितम्बर, 2025

परिपत्र
सेवा में,
सभी ग्राम प्रधान / वार्ड प्रमुख
.....जिला, उत्तर प्रदेश

विषय: जिले में सफाई व्यवस्था पर विशेष ध्यान देने के संबंध में।

सभी संबंधितों को सूचित किया जाता है कि जिले में स्वच्छता और साफ-सफाई बनाए रखने के लिए प्रत्येक ग्राम पंचायत/वार्ड में सफाई व्यवस्था पर विशेष ध्यान देना अनिवार्य है। इसके अंतर्गत कूड़ा-करकट का उचित निस्तारण, नालियों की सफाई, सार्वजनिक स्थानों की स्वच्छता तथा मच्छर प्रजनन रोकथाम के लिए आवश्यक कदम उठाना आवश्यक है।
आपसे अनुरोध है कि निम्नलिखित निर्देशों का सख्ती से पालन सुनिश्चित करें:

1. नियमित रूप से सफाई अभियान चलाएं।
2. नालियों और जल निकासी व्यवस्था को अवरुद्ध न होने दें।
3. कूड़ा-करकट का निपटान निर्धारित स्थानों पर ही करें।
4. नागरिकों को स्वच्छता के प्रति जागरूक करें।
5. मच्छर नियंत्रण के लिए उचित छिड़काव एवं उपाय करें।

आपकी जवाबदेही सुनिश्चित की जाएगी और कार्यों की नियमित समीक्षा की जाएगी। स्वच्छ एवं स्वस्थ वातावरण के निर्माण में आपका सहयोग अत्यंत महत्वपूर्ण है।
आशा है कि आप अपने क्षेत्र की सफाई व्यवस्था में तत्परता एवं जिम्मेदारी पूर्वक कार्य करेंगे।

..... जिला के समस्त ग्राम प्रधानों के नाम तथा आदेशानुसार
(हस्ताक्षर)
जिला अधिकारी, उत्तर प्रदेश सरकार

Q 4. निम्नलिखित शब्दों के विलोम लिखिए।

ऋत, उदयाचल, एषणा, करुण, पुष्ट, जड़, ऋजु, सत्कार, तृषा, चिरन्तन।

उत्तर:

शब्द	–	विलोम
ऋत	-	अनृत
उदयाचल	-	अस्ताचल
एषणा	-	अनैषणा
करुण	-	निष्ठुर
पुष्ट	-	क्षीण
जड़	-	चेतन
ऋजु	-	वक्र
सत्कार	-	दुत्कार
तृषा	-	तृप्ति
चिरन्तन	-	नश्वर

Q 5.

(क) निम्नलिखित शब्दों के उपसर्ग और मूल शब्द अलग-अलग लिखिए:

उनसठ, निकम्मा, दुर्जन, व्यर्थ, अत्युत्कट।

उत्तर:

उपसर्गों का निर्देश

शब्द	-	उपसर्ग	-	मूल शब्द
उनसठ	-	उन	-	सठ
निकम्मा	-	नि	-	कम्मा
दुर्जन	-	दुः	-	जन
व्यर्थ	-	वि	-	अर्थ
अत्युत्कट	-	अति	-	उत्कट

(ख) निम्नलिखित शब्दों में प्रयुक्त प्रत्ययों को अलग कीजिए।

मिलाप, खवैया, लिखाई, लुटेरा, खिलौना।

उत्तर:

प्रत्ययों को अलग

शब्द	-	प्रत्यय
मिलाप	-	आप
खवैया	-	वैया
लिखाई	-	आई
लुटेरा	-	एरा
खिलौना	-	औना

Q 6. निम्नलिखित वाक्यों या पदबन्धों के लिए एक-एक शब्द लिखिए।

उत्तर:

पर्वत की तलहटी	-	उपत्यका
पीढ़ी दर पीढ़ी चला आने वाला	-	अन्वयागत
जिसके पास घर न हो	-	अनिकेत
आदि से अंत तक	-	आद्योपान्त
जो धरती फोड़कर जन्मता हो	-	उद्भिज

Q 7.

(क) निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध कीजिए।

उत्तर:

अशुद्ध वाक्य	शुद्ध वाक्य
(i) आपकी सौभाग्यवती कन्या का विवाह होने जा रहा है।	आपकी सौभाग्यकांक्षिणी कन्या का विवाह होने जा रहा है।
(ii) मैं गुरु जी से श्रद्धा करता हूँ।	मैं गुरु जी पर श्रद्धा रखता हूँ।
(iii) भोजन बहुत सुन्दर बना है।	भोजन बहुत स्वादिष्ट बना है।
(iv) तमाम देश में यह बात फैल गई।	देशभर में यह बात फैल गई।
(v) उसकी सौजन्यता से यह कार्य हुआ है।	उसके सौजन्य से यह कार्य हुआ है।

(ख) निम्नलिखित शब्दों की वर्तनी का संशोधन कीजिए।

उत्तर:

अशुद्ध	-	शुद्ध
अनुग्रहित	-	अनुगृहीत
गरिष्ट	-	गरिष्ठ
अनाधिकृत	-	अनधिकृत
प्रज्ज्वलित	-	प्रज्वलित
जागृत	-	जाग्रत

Q 8. निम्नलिखित मुहावरों / लोकोक्तियों का अर्थ लिखिए और उनका वाक्यों में इस प्रकार प्रयोग कीजिए कि अर्थ स्पष्ट हो जाये।

उत्तर:

मुहावरों / लोकोक्तियों के अर्थ और उनके वाक्यों में प्रयोग:

(i) **चौथ का चाँद होना**
अर्थ: किसी के लिए अशुभ होना
वाक्य: उसके कदम रखते ही बिजली चली गई, सब कहने लगे कि वह चौथ का चाँद हो गया।

(ii) **जमीन आसमान एक करना**
अर्थ: घोर प्रयत्न करना
वाक्य: परीक्षा में अच्छे अंक लाने के लिए उसने जमीन-आसमान एक कर दिया।

(iii) **जूतम पैजार**
अर्थ: लड़ाई-झगड़ा, मारपीट
वाक्य: मामूली बात पर दोनों पड़ोसी आपस में जूतम-पैजार पर उतर आए।

(iv) **टाट उलटना**
अर्थ: दिवाला निकलना
वाक्य: फैक्ट्री में भ्रष्टाचार इतना बढ़ गया कि अंततः मालिक को टाट उलटना पड़ा।

(v) **खटिया सेना**
अर्थ: बीमार होना
वाक्य: लंबे समय से खटिया से रहे दादाजी की कल रात मृत्यु हो गई।

(vi) **अंधी पीसे, कुत्ता खाये**
अर्थ: कोई कमाए कोई खाए
वाक्य: पूरे दिन मैंने मेहनत की और इनाम किसी और को मिला — ये तो अंधी पीसे, कुत्ता खाए वाली बात हो गई।

(vii) **एक मुँह दो बात**
अर्थ: अपनी बात से पलट जाना
वाक्य: वह एक मुँह से दो बातें करता है, इसलिए उस पर भरोसा नहीं किया जा सकता।

(viii) **घोड़ों का घर कितनी दूर**
अर्थ: कर्मठ व्यक्ति के लिए सफलता सरल होती है।
वाक्य: जो निरंतर परिश्रम करता है, उसके लिए 'घोड़ों का घर कितनी दूर' सफलता तो कदम चूमती है।

(ix) **थका ऊँट सराय ताकता है**
अर्थ: दिनभर की मेहनत के बाद घर की याद आती है।
वाक्य: ऑफिस से लौटते हुए मोहन 'थका ऊँट सराय ताकने' जैसा लग रहा था।

(x) **खल की दवा, पीठ की पूजा**
अर्थ: दुष्ट व्यक्ति पर कठोरता और सज्जन व्यक्ति का सम्मान करना चाहिए।
वाक्य: जब तक तुम खल की दवा नहीं करोगे और अच्छे लोगों की पीठ की पूजा नहीं करोगे, समाज में संतुलन नहीं आएगा।